

विचार बिन्दु

प्रत्येक कार्य अपने समय से होता है उसमें उतारली ठीक नहीं, जैसे पेड़ में कितना ही पानी डाला जाय पर फल वह अपने समय से ही देता है। -वृद्ध

हिंसा तो स्वीकार्य नहीं है!

ह ल में दिल्ली की मुख्य मंत्री के साथ हुई एक बारात ने हमें फिर से सोचने को बिवश किया है कि जिससे हमारी किसी भी तरह की असहमति हो उनके प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए। राजनीतिज्ञ और राजनीति कार्यकारी दूसरों की तुलना में अधिक दृश्यमान होते हैं, उनके व्यवहार और विचार अधिक लोगों के प्रभावित और उद्देशित करते हैं, और इसी कारण उनके साथ अगर कोई अनुचित घटना होती है तो उसके चर्चा भी अधिक होती है। राजनीतिज्ञों के बाद खिलाड़ी, फिल्म अभिनेता आदि भी अन्यों को तुलना में अधिक ध्यान आकर्षित करते हैं। इनकी तुलना में लेखक कलाकार प्रायः अलक्षित रह जाते हैं कलाकारों में भी स्मृति वाले ज्यादा ध्यान आकर्षित करते हैं जबकि बहुत सारे अन्य विद्यार्थी वाले कलाकार उनमा ध्यान नहीं खींचते हैं।

दिल्ली की मुख्य मंत्री जब अपने कैप कार्यालय में सापाहिक जन सुनवाई कर रही थी तो एक 41 वर्षीय व्यक्ति ने उन्हें कुछ कागज सौंपने के बाद अचानक खिलाना शुरू किया, उनके साथ धर्म-मुख्यमंत्री की ओर कुछ अन्य अनुचित व्यक्ति की पुलिस बोर्डों के अनुसार ऐसा करने वाला व्यक्ति अप्रिय अनुचित व्यक्ति की अश्रु भी जैसे बाल एक अद्यता के बाद अद्यता से ध्वनि व्यक्ति वह व्यक्ति को एक पूरे प्रेमी बताता है। जैसा कि अप्रिय व्यक्ति को तुलना में लेखक ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इसके बिल्ली तुलना में लेखक कलाकार प्रायः अलक्षित रह जाते हैं कलाकारों में भी स्मृति वाले ज्यादा ध्यान आकर्षित करते हैं जबकि बहुत सारे अन्य विद्यार्थी वाले कलाकार उनमा ध्यान नहीं खींचते हैं।

इसी बीच जो बहुत सारी चर्चाएँ हुई उनमें दिल्ली के संदर्भ में यह भी स्मरण किया गया कि

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदामों पार्टी (AAP) के नेता अधिवेश केजरीवाल पर भी कई बार हमले हुए हैं, 2014 में उनकी हिस्सत में बदल आया आम आदामों पार्टी और भाजपा कार्यकारियों के बीच खड़ा हुआ है। इसके बाद, उनके सार्वजनिक कार्यक्रमों में उन पर ध्यानी, जूते फैकों और अध्यक्ष मारने जैसे हमले हुए हैं। यहीं यह बात भी कम गैर तरब नहीं है कि अभी दिल्ली की मुख्य मंत्री के साथ जो अप्रिय व्यक्ति हुआ उसे तो उनकी पार्टी अर्थात् भाजपा ने तुरंत 'लोकतंत्र पर हमला' और सामाजिक 'राजनीतिक साझिश' बता दिया किंतु जब असंविद के बाद व्यक्ति के साथ ऐसा ही प्रयत्न एकाधिक बात होता है तो इस दल की प्रतिवाद एकदम जटिल भी वैसे ऐसा है। आप तौर पर होता है कि यह हमें प्रिय होता है जैसा कि आप तौर पर होता है। अप्रिय व्यक्ति के बारे में खेलते हैं। प्रिय के साथ ज्ञान-सीधी भी अशिष्टा (हिंसा तो बहुत बड़ी बात है) हमें अखरी है और हम उनकी आलोचना करते हैं जबकि जो हमें प्रिय नहीं होता है या जिससे हमारी असहमति होती है उसके प्रति की गई हिंसा तक हमें जरूर लगती है। इस बात का साथ सेवा बड़ा उद्देश्य माना जाता है। 30 जनवरी 1948 को नाश्तामा गोड़से ने उनके बाद उसे उनके बाद अप्रसंक उनकी हत्या के बाद रंगिन करते हैं जबकि जो महात्मा गांधी के सोच से असहमति थी और वे उनीं कृत्य की बध जैसा सम्मान सूचक नाम देकर इस कृत्य को न केवल उचित बल्कि प्रशंसनीय भी घोषित करते हैं।

और ऐसा केवल शारीरिक हिंसा के मामले में ही नहीं होता है या जिससे हमारी असहमति होती है और अन्यत्र अधिव्यक्तियों को एक खास संदर्भ में कभी असंसदीय कहा जाता है तो आप भाषा में गाली या अप्रशंक कहा जाता है।

इथर जब से सोशल मीडिया का चलन

बढ़ा है भाषिक हिंसा करने वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

किसी की भी इज्जत धूल में मिला सकने की जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इथर एक और नई बात हुई है।

समर्थ और समृद्ध राजनीतिक दलों ने

अपने मीडिया एकांशों (सेलों) और आईटी

एकांशों के माध्यम से संस्थाबद्ध रूप से

वैतनिक आधार पर यह काम करवाने की नई व्यवस्था चलन में लाई है।

जर्मनी में एफडी नेताओं, न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री जसिंह आईने का एक लम्बा सिलसिला है। विदेशों में आग तूरे व्यक्ति के ताजा परिवर्तना है तो भारा में सहाया गांधी से लगाकर अब नंदें पोदी और सुखाल गांधी और श्वेत गांधी में असंविद के जेरीवाल, अभिलेख और न जाने कोन-कोन इसके बाद अधिकारी हुए हैं। महिलाओं के प्रति यह व्यक्ति हिंसा एक अलग ही रूप ले रही है। उनका चरित्र हनन करना शायद ऐसा करने वालों के अधिक रास आता है। कभी इंदिरा गांधी तो अब सोनिया गांधी, स्मृति ईरानी, प्रियंका गांधी, महुआ मोइता और न जाने कैनून-कैन इकानी शिकार हुई है।

इथर जब से सोशल मीडिया का चलन बढ़ा है भाषिक हिंसा करने वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

किसी की भी इज्जत धूल में मिला सकने की जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इथर एक और नई बात हुई है।

समर्थ और समृद्ध राजनीतिक दलों ने

अपने मीडिया एकांशों (सेलों) और आईटी

एकांशों के माध्यम से संस्थाबद्ध रूप से

वैतनिक आधार पर यह काम करवाने की नई व्यवस्था चलन में लाई है।

जर्मनी में एफडी नेताओं, न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री जसिंह आईने का एक लम्बा सिलसिला है। विदेशों में आग तूरे व्यक्ति के ताजा परिवर्तना है तो भारा में सहाया गांधी से लगाकर अब नंदें पोदी और सुखाल गांधी और श्वेत गांधी में असंविद के जेरीवाल, अभिलेख और न जाने कोन-कोन इसके बाद अधिकारी हुए हैं। महिलाओं के प्रति यह व्यक्ति हिंसा एक अलग ही रूप ले रही है। उनका चरित्र हनन करना शायद ऐसा करने वालों के अधिक रास आता है। कभी इंदिरा गांधी तो अब सोनिया गांधी, स्मृति ईरानी, प्रियंका गांधी, महुआ मोइता और न जाने कैनून-कैन इकानी शिकार हुई है।

इथर जब से सोशल मीडिया का चलन बढ़ा है भाषिक हिंसा करने वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

किसी की भी इज्जत धूल में मिला सकने की जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इथर एक और नई बात हुई है।

समर्थ और समृद्ध राजनीतिक दलों ने

अपने मीडिया एकांशों (सेलों) और आईटी

एकांशों के माध्यम से संस्थाबद्ध रूप से

वैतनिक आधार पर यह काम करवाने की नई व्यवस्था चलन में लाई है।

जर्मनी में एफडी नेताओं, न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री जसिंह आईने का एक लम्बा सिलसिला है। विदेशों में आग तूरे व्यक्ति के ताजा परिवर्तना है तो भारा में सहाया गांधी से लगाकर अब नंदें पोदी और सुखाल गांधी और श्वेत गांधी में असंविद के जेरीवाल, अभिलेख और न जाने कोन-कोन इसके बाद अधिकारी हुए हैं। महिलाओं के प्रति यह व्यक्ति हिंसा एक अलग ही रूप ले रही है। उनका चरित्र हनन करना शायद ऐसा करने वालों के अधिक रास आता है। कभी इंदिरा गांधी तो अब सोनिया गांधी, स्मृति ईरानी, प्रियंका गांधी, महुआ मोइता और न जाने कैनून-कैन इकानी शिकार हुई है।

इथर जब से सोशल मीडिया का चलन बढ़ा है भाषिक हिंसा करने वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

किसी की भी इज्जत धूल में मिला सकने की जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इथर एक और नई बात हुई है।

समर्थ और समृद्ध राजनीतिक दलों ने

अपने मीडिया एकांशों (सेलों) और आईटी

एकांशों के माध्यम से संस्थाबद्ध रूप से

वैतनिक आधार पर यह काम करवाने की नई व्यवस्था चलन में लाई है।

जर्मनी में एफडी नेताओं, न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री जसिंह आईने का एक लम्बा सिलसिला है। विदेशों में आग तूरे व्यक्ति के ताजा परिवर्तना है तो भारा में सहाया गांधी से लगाकर अब नंदें पोदी और सुखाल गांधी और श्वेत गांधी में असंविद के जेरीवाल, अभिलेख और न जाने कोन-कोन इसके बाद अधिकारी हुए हैं। महिलाओं के प्रति यह व्यक्ति हिंसा एक अलग ही रूप ले रही है। उनका चरित्र हनन करना शायद ऐसा करने वालों के अधिक रास आता है। कभी इंदिरा गांधी तो अब सोनिया गांधी, स्मृति ईरानी, प्रियंका गांधी, महुआ मोइता और न जाने कैनून-कैन इकानी शिकार हुई है।

इथर जब से सोशल मीडिया का चलन बढ़ा है भाषिक हिंसा करने वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल ग

